

विकास नगर-उत्तराखण्ड। ज्ञानचर्चा के पश्चात् विधायक मुना सिंह चौहान को ईश्वरीय स्मृति चिन्ह भेंट करते हुए ब.कु. तारा।



रेवाड़ी-हरि। आध्यात्मिक कार्यक्रम के दौरान एस.डी.ओ. को ईश्वरीय सौगात भेंट करते हुए ब.कु. कमलेश तथा ब.कु. एकता।



दिल्ली-लाजपत-नगर। शिवरात्रि मेले में निगम पार्षद सुनील सहदेव व उनकी धर्मपत्नी नीलम सहदेव को ईश्वरीय सौगात भेंट करते हुए ब.कु. चन्द्र तथा ब.कु. जया।



दिल्ली-लोधी रोड। इरेडा, भारत सरकार में महिला दिवस पर संगोष्ठी के उपरांत केक कटिंग करते हुए ब.कु. पुष्पा, डॉ. सविता, मा.आबू, ब.कु. गिरिजा, ब.कु. पीयूष तथा अन्य।



फतेहगढ़-उ.प्र.। 'मधुर मधुमेह शिक्षा कैम्प' में उपस्थित नगरपालिका चेयरमैन बसला अग्रवाल को ईश्वरीय स्मृति चिन्ह प्रदान करते हुए ब.कु. सुमन। साथ हैं डॉ. वालसलम नायर, मा.आबू तथा अन्य।



दिल्ली-मजलिस पार्क। शिवजयंती के कार्यक्रम में कैडल लाइटिंग करते हुए चारों धर्मों के क्षेत्रीय अध्यक्ष, फादर अरुण, क्रिश्चियन, गुरुद्वारा प्रबन्धक सरदार बलवंत सिंह एवं सरदार गुरमीत सिंह, मस्जिद के इमाम मोहम्मद इन्तज़ार, इन्द्रा नगर मन्दिर के प्रधान गोपाल पंडित तथा ब.कु. राजकुमारी।

जैसी श्रद्धा... वैसा स्वरूप...

- गतांक से आगे... सत्रहवें अध्याय में मनुष्य के आहार, यज्ञ आदि कर्म, तप और दान में किस प्रकार श्रद्धा कार्य करती है यह बताया गया है। प्रकृति के तीन गुणों का, मनुष्य के आध्यात्मिक जीवन में पड़ने वाले प्रभाव का अध्ययन कराया है। भावार्थ ये है कि सतो गुण, रजो गुण, तमो गुण से हमारे शरीर रूपी प्रकृति का निर्माण कैसे होता है। जिस तरह का भोजन मनुष्य स्वीकार करते हैं, वैसी प्रकृति को वो निर्मित करते हैं।

पहले श्लोक से लेकर छठवें श्लोक तक व्यक्ति के गुण, ज्ञान और श्रद्धा का सम्बन्ध बताया है। तीनों का आपस में



- ब.कु. ऊषा, वरिष्ठ राजयोग प्रशिक्षिका

सातवें श्लोक से लेकर बाइसवें श्लोक तक तीन प्रकार के आहार - सतो, रजो, तमो, तीन प्रकार के यज्ञ, तीन प्रकार की तपस्या और तीन प्रकार के दान स्पष्ट किए गए हैं।

तेइसवें श्लोक से लेकर अट्ठाइसवें श्लोक तक परम सत् और ओम शब्द की परिभाषा को स्पष्ट किया गया है। कई बार हम लोग 'ओम तत्सत्' बोलते रहते हैं। लेकिन उसका सच्चा आध्यात्मिक अर्थ क्या है? इस अर्थ को इस अध्याय के अंत में स्पष्ट किया गया है।

अर्जुन सबसे पहला सवाल इस अध्याय के प्रारंभ में भगवान से पूछता है कि हे भगवन! जो मनुष्य ज्ञान रहित, श्रद्धा युक्त होकर यज्ञ कर्म करते हैं उनकी निष्ठा सात्विक है, राजसिक है या तमसिक है? माना ज्ञान

नहीं है, श्रद्धा है और यज्ञ कर्म करते हैं तो इसको क्या कहा जायेगा?

भगवान कहते हैं कि हे अर्जुन! सभी मनुष्यों की श्रद्धा उनके स्वभाव संस्कार के अनुरूप होती है। जैसी जिसकी श्रद्धा, वैसा उसका स्वरूप होता है। इसलिए दोनों बातें हैं। श्रद्धा है लेकिन ज्ञान नहीं है। मानो वो देवताओं को पूजते हैं तो उसे सात्विक पूजा मानेंगे। यदि श्रद्धा और ज्ञान नहीं लेकिन तामसिक प्रेत और भूतों की पूजा करते

हैं तो वह तामसिक माने जाते हैं। जो राजसिक होते हैं - वे यक्ष और राक्षसों की पूजा करते हैं। इस प्रकार श्रद्धा जिसकी जैसी होती है,

ज्ञान नहीं है लेकिन केवल श्रद्धा है तो वो श्रद्धा से जिस प्रकार जिसको पूजने में लगते हैं, उस अनुसार वह सात्विक, राजसिक और तामसिक बनते जाते हैं। इसलिए शायद समाज में लोगों ने देवताओं की पूजा

आरम्भ कर दी। यह सात्विक पूजा तो मानी जाती है। संसार में लोगों में ज्ञान नहीं है, लेकिन श्रद्धा के साथ देवी-देवताओं की पूजा करते हैं। यह भी व्यक्ति के साथ संस्कारों की ओर इशारा करती है। जिस व्यक्ति की प्रकृति तामसिक है, वो भूत-प्रेतों की पूजा करने में श्रद्धा रखते हैं और उसी से प्राप्त करने की इच्छा रखते हैं। जब ज्ञान ही नहीं और श्रद्धा भी ऐसी तामसिकता में रखी है तो उसकी प्रकृति वैसी हो जाती है।

- क्रमशः

ख्यालों के आईने में...

**अजीब दस्तूर है जमाने का,
अच्छी यादें पेनड्राइव में,
और
बुरी यादें दिल में रखते हैं।**

**'चींटी' से मेहनत सीखिए,
'बगुले' से तरकीब,
और
'मकड़ी' से कारीगरी...।
अपने विकास के लिए अंतिम
श्वास तक श्रेष्ठ कर्म करते
रहिए, क्योंकि
श्रेष्ठ कर्म ही जीवन है।**

**ईश्वर को हम देख नहीं सकते,
लेकिन उसकी याद से स्वयं के
व्यक्तित्व में आया
सुंदर बदलाव उसके होने का
साकार प्रमाण है।**

भय के भूत की भ्रामकता... - पेज 2 का शेष

भयमुक्त ज़िन्दगी जीने के सप्त उपायः

1. स्वयं से स्वयं बात करने की आदत बनायें और विश्वास पैदा करें कि मेरे जीवन यात्रा में भगवान सदा मेरे साथ हैं।
2. मन को भय या डर उत्पादन करने की फैक्ट्री न बनायें, नहीं तो डेर सारे नकारात्मक विचारों के माल डाउनलोड होंगे।
3. मैं कमजोर हूँ, ऐसा विचार करना ही अपना अवमूल्यांकन करना है।
4. ज़िन्दगी में सबकुछ सानुकूल ही रहेगा, ऐसी पूर्व धारणा अनुरूप न जीयें।
5. ज़िन्दगी में चुनौतियों को चैलेंज करने का आत्मबल विकसित करें।
6. डर का निमंत्रक नहीं, बल्कि संहारक बनें।
7. मैं और ईश्वर डर को डराने के लिए सक्षम हैं, ऐसा आत्म विश्वास बनायें।

ओमशान्ति मीडिया सदस्यता हेतु सम्पर्क करें...

कार्यालय- ओमशान्ति मीडिया, संपादक- ब.कु. गंगाधर, ब्रह्माकुमारीज़, शान्तिवन, तलहटी, पोस्ट बॉक्स नं.- 5, आवू रोड (राज.)- 307510. सदस्यता के लिए

सम्पर्क - M - 9414006096, 9414182088,

Email- omshantimedia@bkivv.org,

Website- www.omshantimedia.info

सदस्यता शुल्क- भारत - वार्षिक 200 रुपये, तीन वर्ष 600 रुपये, आजीवन 4500 रुपये।

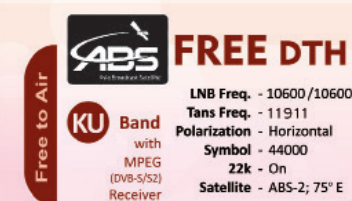
विदेश - 2500 रुपये (वार्षिक) कृपया सदस्यता शुल्क 'ओमशान्ति मीडिया' के नाम से

मनीऑर्डर या बैंक ड्राफ्ट (पेएबल एट शान्तिवन, आवू रोड) द्वारा भेजें।

मन की खुशी और सच्ची शांति के लिए देखें

आपका अपना 'पीस ऑफ माइंड चैनल'

'Peace of Mind' channel



Brohmi Kumar, 3rd Flr
Asand Bhawan, Shantivan,
Sinhli, Abu Rd, Raj-307510
+91 9414151111
+91 8104777111
info@pmtv.in
www.pmtv.in